❋ 25 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बेहद का बाप बैठ इस शरीर द्वारा समझाते हैं। इस शरीर की आत्मा सुनती है। सुनाने वाला ज्ञान सागर बाप है, जिसको अपना शरीर नहीं है। वह सदैव शिव ही कहलाते हैं। जैसे वह पुनर्जन्म रहित हैं, वैसे नाम रूप लेने से भी रहित है। उनको कहा जाता है सदा शिव। सदैव के लिए शिव ही है, जिस्म का कोई नाम नहीं पड़ता। इसमें प्रवेश करते हैं तो भी इनके जिस्म का नाम, उन पर नहीं आता।

2] माया के तूफान तो जरूर आयेंगे। पहले जो आगे होगा वह तो सब अनुभव करेगा ना। बीमारियां आदि सब हमेशा के लिए खत्म होनी हैं, इसलिए कर्मों का हिसाब-किताब, बीमारियां आदि ज्यादा आयें तो इसमें डरना नहीं है। यह सब पिछाड़ी की हैं, फिर होंगी नहीं।

❋ योग-

1] बाप कहते हैं– बच्चे, बुद्धि से एक सत्गुरु को याद करो और सबको भूल जाओ। एक से ही तालुक रखना है। तुम्हारा कहना भी था आप आयेंगे तो आपके सिवाए और कोई नहीं। आपकी ही मत पर चलेंगे।

❋ धारणा-

1] अब तुम्हारी सब तरफ से रगें टूट जानी चाहिए क्योंकि घर चलना है, कोई ऐसा विकर्म न हो, जो ब्राह्मण कुल का नाम बदनाम हो।

2] बाप पतित-पावन सद्गति दाता भी है। साथ ले जाने वाला भी है और रास्ता भी बहुत सहज बताते हैं। पतित से पावन बनाने लिए कोई मेहनत नहीं देते हैं। कहाँ भी जाओ घूमते फिरते विलायत में जाते सिर्फ अपने को आत्मा समझो। सो तो समझते हैं। परन्तु फिर भी कहते हैं अपने को आत्मा निश्चय करो, देह-अभिमान को छोड़कर आत्म-अभिमानी बनो। हम आत्मा हैं, शरीर लेते हैं पार्ट बजाने के लिए। एक शरीर से पार्ट बजाए फिर दूसरा लेते हैं।

3] कोई को तो सब मित्र-सम्बन्धी आदि याद आते रहते। मोह में फँस मरत हैं। रग जुटी रहती है। कोई का तो झट कनेक्शन टूट पड़ता है। तोड़ना तो है ही। बाप ने समझाया है कि अभी वापस जाना है।

4] बाप कहते हैं– बच्चे, सदैव हर्षित रहो। यहाँ के हर्षितपने के संस्कार फिर साथ ले जायेंगे। तुम जानते हो हम क्या बनते हैं? बेहद का बाप हमको यह वर्सा दे रहे हैं और कोई भी दे न सके।

5] आगे तो बिल्कुल स्त्री की तरफ देखते भी नहीं थे। समझते थे जरूर बुद्धि जायेगी। बहन-भाई के सम्बन्ध में भी बुद्धि जाती है इसलिए बाबा कहते हैं भाई-भाई देखो। शरीर का नाम भी नहीं। यह बड़ी ऊंची मंज़िल है।

6] **विदेहीपन का अभ्यास करो – यही अभ्यास अचानक के पेपर में पास करायेगा।**

❋ सेवा-

1] बाप बैठ समझाते हैं, मेरी सर्विस करने वाले बच्चे ही मुझे प्रिय लगते हैं। बहुतों को सुखदाई बनाते हैं, ऐसे बच्चों को याद करता रहता हूँ।